पवित्र आत्मा के साथ आपका सम्बन्ध कैसा है?

कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर

स्वर्गीय कार्ल एच स्टीवेंस जूनियर सन २००५ तक ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच बाल्टीमोर, मेरीलैंड के पास्टर थे, और उन्होंने मेन और मैसेचुसेट्स में संपन्न सेवकाईयों की स्थापना की। सन २००८ में पास्टर स्टीवेन्स की मृत्यु के द्वारा चार दशकों में फैली सेवकाई के अन्त की निशानी बनी जिसके दौरान बाल्टीमोर में मैरीलैंड बाइबिल कॉलेज एण्ड सेमिनरी की स्थापना और "द ग्रेस हॉवर" का विकास हुआ, जो एक एंजेल पुरस्कार अर्जित रेडियो टॉक शो है जो आज भी उत्तरी अमेरिका भर में विभिन्न मसीही स्टेशनों और इंटरनेट के माध्यम से सुना जाता है।

यह पुस्तिका पास्टर स्टीवेंस द्वारा प्रचार किये गए एक संदेश से बनाई गई है।

जब तक अन्यथा न विस्तृत किया जाए, सभी कथन पवित्र शास्त्र बाइबल से हैं। जोर देने के लिए इटैलिक्स हमारी ओर से हैं।

GRACE PUBLICATIONS
6025 MORAVIA PARK DRIVE
BALTIMORE, MD 21206
कॉपीराइट © 1996

ग्रेस पब्लिकेशन ग्रेटर ग्रेस वर्ल्ड आउटरीच की एक सेवकाई है।

www.ggwo.org

हिन्दी अनुवादों का प्रकाशन
ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
www.vashichurch.com

सामग्री की तालिका

भूमिका. ५

अध्याय १. . . . . ७

मसीही लोग कैसे पवित्र आत्मा के विरुद्ध चलते हैं

अध्याय २. . . . . .१२

अनुचित सम्बन्धों के द्वारा आत्मा को शोकित करना

अध्याय ३. . . . . १७

दृढ़ विश्वास के द्वारा जीवित रहना

निष्कर्ष. १९

भूमिका

“परमेश्वर का मार्ग सिद्ध है; यहोवा का वचन ताया हुआ है; वह अपने सब शरणागतों की ढाल है।” (भजन संहिता १८:३०)

हमारे जीवन की प्रत्येक बात परमेश्वर के वचन के द्वारा नापी जाती है। बाईबल एक माप है जिसके द्वारा हमारे सब कार्य और विचार नापे जायेंगे। वचन के द्वारा मसीह के बीमा आसन के सामने जहाँ पर प्रत्येक विश्वासी के कार्यों का आंकलन किया जाएगा और ईनाम दिया जाएगा – वहीं अनन्त में हमारा क्या होगा यह निश्चित किया जाएगा।

एक मुख्य बात जो बीमा न्याय आसन पर हमारा इनाम पाना निश्चित करेगी वह यह होगी कि हमने सत्य को कैसे अपनाया। वचन को ग्रहण करना और समझना इस पर निर्भर करता है कि हम पवित्र आत्मा की शुरुआतों के लिए कितने उपलब्ध हैं। पवित्र आत्मा ही हमारे हृदयों को छेदता, हिलाता और उनमें सच्चाई को प्रकट करता है। प्रश्न यह है कि, “आपने कैसे सुना और जो सुना उस विषय पर आपने क्या किया?”

इस पुस्तिका में, हम मसीहियों द्वारा की जाने वाली उन चार बातों का अवलोकन करेंगे जो पवित्र आत्मा के काम को सीमित करती हैं। यह न सोचें कि हम पवित्र आत्मा की ईशनिंदा (blasphemy) की बात कर रहें हैं (यह तब होता है जब एक अविश्वासी यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानने से इन्कार करता है)। ये चार बातें – पवित्र आत्मा का अपमान (insulting), विरोध (resisting), बुझाना (quenching) और शोकित करना (grieving) – बहुत गम्भीर हैं। प्रत्येक गलती दूसरी की ओर ले जा

सकती है और परिणामस्वरूप मसीही की परमेश्वर के साथ चाल में बाधा डालती है।

अध्याय एक

मसीही लोग कैसे पवित्र आत्मा के विरुद्ध चलते हैं

"तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया।" (इब्रानियों १०:२९)

"हे हठीले, और मन और कान के खतनारिहत लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो।" (प्रेरितों के काम ७:५१)

"और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है।" (इफिसियों ४:३०)

"आत्मा को न बुझाओ।" (१ थिस्सुलिनीकियों ५:१९)

क्या कभी आपका अपमान हुआ है? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि जब आप किसी से बात कर रहें हैं, और जब आप बोल ही रहे हैं, उसी वक्त वह कुछ और करना शुरू कर देता है? इब्रानियों १०:२९ उन लोगों की बात बता रहा है जिन्होंने अनुग्रह के आत्मा का 'अपमान' किया है। यूनानी भाषा में अपमान के लिए जो शब्द है वह 'एन्युब्रिजो' है, जिसका अर्थ है – 'अनादर करना'। जब हम कलीसिया में होते हैं और परमेश्वर के वचन के सन्देश को नहीं सुनते हैं, तब हम मसीह का अपमान करते हैं। और इसके आगे, हम उस सन्देश में जो भी कहा जा रहा है उसका प्रत्युत्तर नहीं देते हैं तो यह भी अपमान है। जब हम परमेश्वर के भवन में आते हैं तो हमें जो सुन रहें हैं उसमें विश्वास का मिश्रण करना है (इब्रानियों ४:२)। नहीं तो, हम पवित्र आत्मा का अपमान कर रहे हैं।

आपने अनजाने में भी शायद आज पवित्र आत्मा का अपमान किया होगा। उदहारण के लिए, कल्पना करिये कि आप कलीसिया की आराधना सभा में बैठे हैं। आपकी आँखें तो वक्ता पर लगी हुई हैं, और आपका ध्यान कहीं और है। वह भटकता है, फिर लौटता है, फिर भटकता है और फिर लौटता है। पवित्र आत्मा के अपमान का यही मतलब है। यह तब होता है जब हम उन सटीक वचनों को नहीं सुनते, जो पवित्र आत्मा की अगुवाई में वक्ता द्वारा व्यक्त किये जा रहे हैं।

इससे आगे बढ़ते हुए, कल्पना करें कि आप किसी आत्मा से परिपूर्ण और प्रशिक्षित सलाहकार के द्वारा अपने जीवन की कुछ समस्याओं के लिए सलाह ले रहे हैं। उसकी बात न सुनकर आप पवित्र आत्मा का अपमान कर रहे हैं, जिसके भरोसे उसने आपको बुद्धिमत्ता भरी सलाह दी।

एक दूसरे का अपमान करना एक बात है, परन्तु पवित्र आत्मा का अपमान एकदम अलग है। हो सकता है कि पास्टर गलातियों ५:१९ से यह प्रचार कर रहा है कि देह की लालसा का एक पहलू व्यभिचार (fornication) है। फिर भी, यदि आप निश्चय करते हैं कि आप वैवाहिक सम्बन्ध के बाहर सम्बन्ध रखेंगे और उसमें बने रहेंगे, तो यह अपमान है। पश्चाताप की भेंट के द्वारा क्षमा-प्राप्ति अनुभव की जाती है (१ यूहन्ना १:९)। फिर भी, किसी को भी अनुग्रह का व्यर्थ उपयोग करते हुए पवित्र आत्मा का अपमान नहीं करना चाहिए।

सुनने के लिए प्रोत्साहन

"जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है:जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वार्गलोक में है, फल खाने को दूँगा।" (प्रकाशितवाक्य २:७अ)

मैं कुछ ऐसे हिस्से बताना चाहता हूँ जहां पवित्र आत्मा ने हमें सुनने के लिए प्रोत्साहित किया है। यिर्मयाह ७:२ के अनुसार जब हम आराधना में जाते हैं तो हमें सुनने के लिए कहा गया है। यशायाह १:१० और २८:१४ में शासकों और ठट्ठा करने वालों को सुनने के लिए कहा गया है। यिर्मयाह २:४ में याकूब के घराने को सुनने के लिए कहा गया है। यिर्मयाह २२:२९ में परमेश्वर ने पूरी दुनिया के लिए घोषणा की, "हे पृथ्वी, पृथ्वी, पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन।" परमेश्वर को यह कहने की आवश्यकता उन सब लोगों की वज़ह से हुई जो पवित्र आत्मा को न सुनने के द्वारा उसका अपमान कर रहे थे।

परमेश्वर का वचन कहता है, "हे इसरायल के पर्वतों, सुनो........." (यहेजकेल ३६:१), "हे वेश्या, सुन........." (यहेजकेल १६:३५), "चरवाहों – पासवानों – सुनो........." (यहेजकेल ३४:७), "सूखी हड्डियों, सुनो........." (यहेजकेल ३७:४)।

पवित्र आत्मा को सुनना कितना आवश्यक है।

आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में चलते हुए प्रभु की आवाज सुनी (उत्पत्ति ३:८)। प्रत्येक सुबह, जब उसके लोग सुनते हैं, परमेश्वर अपने न्याय को रोशनी में लाता है, और वह ऐसा करने में कभी चूकता नहीं (सर्पन्याह ३:५)। परमेश्वर का वचन सुनने के लिए भीड़ यीशु पर गिरी पड़ी थी (लूका ५:१), और प्रभु यीशु वही बोलता था जो वह पिता से सुनता था (यूहन्ना १२:४९-५०)।

अधूरी आज्ञाकारिता में न रुको

"हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो।" (प्रेरितों के काम ७:५१)

अब हमें यह देखना है कि पवित्र आत्मा का विरोध करने का क्या अर्थ है। पवित्र आत्मा का विरोध करने का अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा जो कहता है उसे सुनना, पर उसके पर्यान्त उसके अनुसार न करना। इसमें वचन को सुनना तो है, परन्तु उसके बाद परमेश्वर को अपने जीवन व स्वभाव का भाग न स्वीकार करने का चुनाव करना है। याकूब १:२२ यह स्पष्ट करता है कि हमें सुनना है और आज्ञापालन करना है। भजन संहिता १८:४४ बताता है कि जैसे ही हम परमेश्वर का वचन सुनते हैं, तुरन्त उसका आज्ञापालन करना अति आवश्यक है।

फिर ऐसे भी लोग हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसके आज्ञापालन का विचार तो करते हैं, पर फिर उसे पूरा नहीं करते हैं। और यही पवित्र आत्मा को बुझाना कहलाता है। १ थिस्सिलुनीकियों ५:१९ कहता है "पवित्र आत्मा को मत बुझाओ।" हम पवित्र आत्मा को तब बुझाते हैं जब हम उसकी कही बातों पर विचार तो करते हैं, परन्तु फिर उसे न करने का निर्णय ले लेते हैं। यह हो सकता है कि कलीसिया की आराधना सभा के बाद हम अपनी कार में बैठकर किसी और विषय पर बातें करने लगें। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हमें उस सन्देश का ख़याल नहीं है; परन्तु हम उसके प्रति असंवेदनशील होकर, अपनी व्यस्तताओं और प्रमुखताओं में ध्यान लगाकर उसे खो सकते हैं। और संभव है कि उस समय हमने पवित्र आत्मा को बुझा दिया। पवित्र आत्मा हमारे लिए सीधे स्वर्ग से परमेश्वर की इच्छानुसार कुछ लाया, परन्तु हमने उसके प्रभाव का विचार किए बिना उसे छोड़ दिया।

कल्पना करो कि आग पर कुछ रखा हुआ है, और फिर आग बुझ जाती है : हम कहते हैं कि आग बुझ गई, चाहे ईंधन की कमी से या किसी बाहरी प्रभाव से। जब लोग परमेश्वर का वचन

सुनते हैं और उसका प्रत्युत्तर देना बन्द कर देते हैं, तो यह पवित्र आत्मा को बुझाना है। वे उस पर विचार और मनन तो करते हैं, परन्तु उसके बाद पवित्र आत्मा ने उनसे जो कहा उसे त्याग देते हैं। वे पूरी तरह से समाप्त नहीं करते, और पवित्र आत्मा ने जो काम शुरू किया था उसे बुझाने लगते हैं।

पवित्र आत्मा परमेश्वर का वह व्यक्तित्व है जो हमें सत्य के बारे में निरुत्तर करता है और पिता की योजना को प्रकट करते हुए हममें काम करता है। उसका सन्देश स्पष्ट होता है, जब वह हमारे आत्मा के समक्ष सत्य की गवाही देता है (रोमियों ८:१६)। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम उसे अपने अन्दर जीवन की स्वांस फूँकने दें। जब वह बोलता है तो उसको नज़रंदाज़ करके उसका अपमान न करें। प्रत्येक उस सत्य पर मनन करें जो वह आपके हृदय में उजागर करता है। फिर उसके द्वारा दी गई मदद को हल्का न जानकर अपने मनों में उसकी आग को जलाए रखें।

अध्याय दो
अनुचित सम्बन्धों के द्वारा आत्मा को शोकित करना

"कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो। और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप, और क्रोध, और कलह, और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाएँ। और एक दूसरे पर कृपालु और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।" (इफिसियों ४:२९-३२)

हम पवित्र आत्मा को तब शोकित करते हैं जब हम अनुचित सम्बन्ध बनाते हैं। बहुत सी समस्याओं के पीछे अनुचित सम्बन्ध होते हैं: परमेश्वर के साथ अनुचित सम्बन्ध, मित्रों के साथ, अपने सहकर्मियों के साथ, अपने जीवन साथी के साथ, अपने परिवार के साथ। जब एक विवाहित पुरुष अपनी अनैतिकता में अपनी पत्नी के सिवा पराई स्त्री से सम्बन्ध बनाता है, तब वह अपने इस काम के द्वारा मसीह का अपमान करता है; ऐसी परिस्थिति के बारे में कहा गया वचन न सुनने के द्वारा वह पवित्र आत्मा का विरोध करता है; वह वचन को अपने स्वभाव का भाग न बनाने के द्वारा पवित्र आत्मा को बुझा देता है; और तब अपने अनुचित सम्बन्ध के द्वारा आत्मा को शोकित करता है, जो उसके हर एक काम में नाशकारक है।

सम्बन्धों को पवित्र रखें

हम सब किन्हीं मौकों पर दुखी हुए हैं जब हम प्रेम और दयालुता के कारण किसी को आत्मिक बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे थे। शोकित होना क्या होता है, यह आपको तब समझ में आता है जब आप किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो एक अच्छे कलीसिया में परमेश्वर की सेवा करता हुआ आगे बढ़ रहा होता है; और फिर एक कोई रूकावट उसके परिवार में आती है, और वह अचानक से दूर जाने लगता है। उस व्यक्ति की समस्याएं तब शुरू हुईं जब उसने अपने जीवन में परमेश्वर के उस काम को जो 'वह' करना चाहता था, उसका अपमान एवं विरोध किया और बुझा दिया। आखिरकार वह मसीह की देह के साथ अपने अनुचित सम्बन्ध से पवित्र आत्मा को शोकित करता है।

एक विश्वासी गपशप के द्वारा गलत सम्बन्ध स्थापित करके पवित्र आत्मा को शोकित करता है। मुँह खुला है, जीभ बड़बड़ा रही है। कोई कुछ कह रहा है और वह सुनता है (यद्यपि उसे पता है), और उसका सुनना गलत सम्बन्ध पैदा करता है। बाइबल स्पष्ट कहती है कि सम्बन्धों को बहुत सावधानी से रखना चाहिए।

बहुत से लोग हैं जो अपने मन में नाराजगी रखते हुए एक दुसरे के प्रति चुप्पी साध लेते हैं। इन हर कामों में वे आत्मा का अपमान, विरोध, बुझाना और अंततः शोकित करते हैं और इस प्रकार आत्मा को दुखी कर देते हैं क्योंकि उनके सम्बन्ध अनुचित हैं।

एक और उदहारण उस व्यक्ति का हो सकता है जो चर्च में पुनर्जागृति के मध्य में बैठा है, और परमेश्वर का कम जो इस समय उसके आसपास हो रहा है उससे अनभिग्य है। इन्ही दिनों में एक रविवार को हमारी आराधना सभा के समय सोलह लोगों ने प्रभु यीशु को ग्रहण किया। वह मन में सोचता है कि 'अच्छा

है’। परन्तु फिर तुरन्त वह अपने दोपहर के कामों की योजना के विषय में सोचने लगता है। नहीं, यह उस अच्छे से भी बहुत बढ़कर है - यह रिवाइवल है, जो परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में हो रहा है। परन्तु इस व्यक्ति का पवित्र आत्मा से अनुचित सम्बन्ध है और वह रिवाइवल के प्रति सजग नहीं है। स्वर्ग और स्वर्गदूतों के द्वारा आनन्द मनाया जा रहा है और यह व्यक्ति जल्द से जल्द चर्च के दरवाजे की ओर जाने की कोशिश कर रहा है। जब लोगों के प्राण बचाए जा रहें हों तब भी जो व्यक्ति दरवाजे की ओर जल्दी में बढ़ता है, तब उसकी सोच गलत है। यह मुझे बहुत उदास करता है। यीशु को ग्रहण करने के लिए निमंत्रण देने (साल्वेशन कॉल) का समय वह है जब हमें पवित्र आत्मा के काम के प्रति पूरी तरह से जागरुक रहना चाहिए।

परमेश्वर की मदद को धारण करें

“इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो।” (कुलुस्सियों ३:१२)

अय्यूब के पहले दो अध्यायों में हम इस प्रभु के दास को प्रताड़ित होते देखते हैं। आसमान के नीचे इस संसार में जो भी बुरा उसके साथ हो सकता था वह सब हुआ। फिर भी अय्यूब एक बात अच्छी तरह जानता था कि शैतान की शक्ति सीमित है। इसलिए अय्यूब ने अपने विचारों में परमेश्वर के वचन के आधार पर सत्य के ऐसे खूबसूरत क्रम में प्रवेश किया, जिससे उसकी सोच के आधार में अनुग्रह का दृष्टिकोण प्रकट हुआ। वह परमेश्वर के अनुग्रह के अच्छे भण्डारी के जैसे दूसरों को अनुग्रह देता रहा और अपनी अनन्त की योजना, मकसद और मदद को परिपूर्ण

करता रहा। अय्यूब की आत्मचेतना में सकारात्मक इच्छाशक्ति उसके जीवन में काम करने लगी।

अय्यूब ने क्या किया? उसने अपनी भावनाओं में करुणा, दयालुता, नम्रता या मन की दीनता और सहनशीलता को पहन लिया। इन्ही के परिणामस्वरूप इतनी कठिन परिस्थिति में विजय हुई।

आत्मा के फलों में से प्रत्येक हमारे लिए एक विशेष मतलब रखता है। वे हममें हमारी इच्छाशक्ति के एक खास निर्णय के द्वारा कार्य शुरू करते हैं। हमें सिर्फ उन्हें धारण करना चुनना है।

अपने आप को पवित्र देखें

सबसे पहले, यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने आपको 'पवित्र और प्रिय' देखें, जैसा कि परमेश्वर हमें देखता है। इसका अर्थ यह है कि हम उसके द्वारा अलग और पवित्र किए गए हैं कि उसका प्रेम ग्रहण कर सकें। हम प्रभु के लोग बहुत सारी हालातों के बीच में, हमेशा ऐसे खूबसूरत समय पाते हैं जिनमें परमेश्वर हमें 'प्रिय' कहकर पुकारता है। जब हम अपने व्यस्तता भरे कार्यक्रमों और थकान भरी परेशानियों और परीक्षाओं से गुज़रते हैं, तब पवित्र आत्मा हमारे कानों में फुसफुसाता है कि हम 'प्रिय' हैं।

अरे, कितना अच्छा होता कि हम यह समझ सकते कि परमेश्वर हमें यह बताने में कितना आनन्दित होता है कि वह हमसे कितना प्रेम करता है।

ज़रा सोचिये कैसे परमेश्वर ने योहन्ना २१:१५-१८ में पतरस को सम्बोधित किया। वह हमसे अभी उतना ही प्रेम करता है जितना पतरस से तब करता था। पतरस पीछे हट चुका था; वह मछली पकड़ने के धंधे में वापिस गया और वह शिष्यों की एक

टोली को अपने साथ ले गया। उसका अपने आसपास के लोगों पर ऐसा प्रभाव था।

फिर भी, यीशु पतरस के पास आया और प्रेम में उसे पुनर्स्थापित किया।

प्रत्येक व्यक्ति को प्रेम और देखभाल की आवश्यकता होती है। हम स्वयं में या दूसरों में जो कमजोरियां पाते हैं, उनके बावजूद ध्यान रखें कि परमेश्वर कितनी सम्पूर्णता में हमसे प्रेम करता है। इससे पहले कि हम उसे अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करते, जब हम पापी ही थे तब वह हमारे लिए मरा। जब प्रेम के अयोग्यों को प्रेम करने की बारी आती है, तो पवित्र आत्मा का अपमान, विरोध, बुझाना और शोकित मत करो। अनुग्रह के आत्मा को अपने में और अपने द्वारा कार्य करने दो। यही पवित्र आत्मा तुम्हे वह बुद्धिमत्ता देगा जिसकी तुम्हे प्रत्येक सम्बन्ध को शुद्ध रख सकने के लिए आवश्यकता है।

अध्याय तीन

दृढ़ विश्वास के द्वारा जीवित रहना

विचारों और दृढ विश्वास में बहुत अन्तर है। विचार पसंद पर आधारित होता है, परन्तु दृढ विश्वास परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर आधारित है, जो तुम्हारे विवेक में जड़ बना लेती है। एक दृढ विश्वास परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित हमारे विवेक में जड़ बनाकर हम जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं उसमें हमें उचित सुनने, उचित सम्बन्धों, उचित ग्रहण करने, उचित प्रसार और उचित वार्तालाप में ले जाता है।

मार्टिन लूथर ने प्रार्थना की कि उसके जीवन में परमेश्वर की इच्छा पूरी हो। वह सचमुच में परमेश्वर की सेवा नहीं करना चाहता था, परन्तु वह सोचता था कि वह धार्मिक बनना पसन्द करेगा। एक दिन, जब वह और उसका सबसे अच्छा मित्र साथ में चल रहे थे, बिजली गिरने के कारण उसके मित्र की मृत्यु हो गई। लूथर ने चौबीस घन्टे के अन्दर ही निर्णय ले लिया कि वह परमेश्वर की सेवकाई करेगा, यहाँ तक कि अपने माता पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर भी।

लूथर के मन में पवित्र आत्मा के द्वारा दृढ निश्चय स्थापित हुआ और आगे जाकर वह परमेश्वर के पीछे चलते हुए दुनिया को बदलने के लिए इस्तेमाल किया गया।

फलवन्त होना

"मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।" (यूहन्ना १२:२४)

कल्पना करें यदि पाप रहित, सिद्ध परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने इस वचन को कभी पूरा नहीं किया होता। वह अपनी स्वयं की प्रवीणता की वजह से स्वर्ग को गया होता। वह सीधे स्वर्ग को जाता और वहाँ अपने पिता के साथ हमेशा रहता, लेकिन वहाँ उसे अकेले रहना पड़ता। उसकी कोई 'दुल्हन' नहीं होती। उसकी देह नहीं होती। परन्तु इसलिए कि उसकी देह और दुल्हन हो, यीशु मसीह को मरना आवश्यक था।

इस बारे में विचार करें: यीशु मसीह ने जो जीवन मनुष्य के रूप में जिया, उससे हमें दोषी ठहराया क्योंकि उससे व्यवस्था की पूर्ति हुई (यूहन्ना ३:१८-१९)। वह जीवन उसमें पवित्र आत्मा का जीवन था। यीशु के जीवन ने न केवल हमें दोषी ठहराया, बल्कि उसके द्वारा यीशु के लिए यह भी सम्भव हुआ कि वह हमारे बदले एक ऐसी प्रत्यधिकृत (vicarious) मृत्यु मर सका, जो सम्पूर्ण थी और हमारे सभी पापों का भुगतान की। इसके द्वारा यह भी सम्भव हुआ कि आप और मैं पवित्र आत्मा को ग्रहण करें और उस जीवन को ग्रहण करें जो यीशु मसीह में था। अब केवल हमारे यीशु पर विश्वास और उसको अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने के द्वारा वह हमारे शरीरों में उसी जीवन में जी सकता है जिसमें वह अपने शरीर में जिया था। इसलिए जो उस पर विश्वास करते हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं है (रोमियों ८:१)।

परमेश्वर की मर्ज़ी पूरा करने की इच्छा

"जो कुछ मेरे लिये उस ने ठाना है, उसी को वह पूरा करता है; और उसके मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं।" (अय्यूब २३:१४)

"तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।" (१ थिस्सुलिनीकियों ५:२४)

जब हम पवित्र आत्मा का वह जीवन ग्रहण करते हैं जिसके द्वारा यीशु हमारे लिए मरने के योग्य हुआ, जब हम यीशु मसीह का सर्वोत्तम जीवन ग्रहण करते हैं, हम उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं। वह जीवन हममें आता है और हममें बना रहता है। हम कोप से बचाए जाते हैं। उसकी मृत्यु के द्वारा हमारा मिलाप (reconciliation) हुआ है। और मेलमिलाप से भी बढ़कर हम उसके जीवन के द्वारा बचाए गए हैं।

जो जीवन यीशु में था उसके द्वारा बचाए जाने में हमारा कितना असाधारण विशेषाधिकार है। वह हमें अब कोई ऐसा काम करने को नहीं कहेगा जो वह स्वयं नहीं पूरा करेगा। उसका वही जीवन जो उसे पाप करने से रोकता था, हमें पाप करने से रोकने के लिए हममें है।

व्यवस्था ने हम पर दण्ड की आज्ञा दी और यीशु ने जो जीवन जिया उससे भी हम दोषी ठहरे। परन्तु जब हम उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, तब हम पर दण्ड की आज्ञा नहीं है। विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हम बचाए गए हैं। यह वाकई परमेश्वर की ओर से भेंट है। ऐसे कोई भी कर्म नहीं हैं जिनके द्वारा हम घमण्ड कर सकें।

निष्कर्ष

मसीही होने के नाते हमें उन लोगों की हालत समझना है जो कष्ट भोग रहे हैं, चाहे वे कष्ट उचित हों या अनुचित। उनकी आलोचना करने या उनके बारे में फैसला करने के बदले हम पवित्र आत्मा की परिपूर्णता ग्रहण करें और जीवन के वचनों को अपने मनों में पूरी तरह से समाने और बसने दें। जो जीवन यीशु ने जिया, वह हममें भी है।

विश्वास की शान्ति में, सत्य की शुद्धता और परमेश्वर की सत्यनिष्ठा को स्वीकार करने में, हम उस स्वभाव के पात्र और सहभागी होकर जी सकते हैं, जो हमें इस संसार में मौजूद दूषण से अपने को बचाने में मदद करता है (२ पतरस १:४)।

यीशु मसीह अपनी पूरी पवित्रता में हमारे पास आकर कहता है, "क्या मैं तुम्हारे हाथ ले सकता हूँ? क्या मैं तुम्हारी आँखें ले सकता हूँ? क्या मैं तुम्हारे कान, तुम्हारे पैर, और तुम्हारा मन ले सकता हूँ? मैं तुम्हारी मानवता उधार लेना चाहता हूँ।"

काश हमारा उत्तर यह हो: "हाँ प्रभु, आप यह सब ले सकते हैं। और यदि मैं इन चीज़ों को फिर कभी वापिस ले लूं, तो कृपा करके वापिस फिरने में मेरी मदद करिएगा। आपके अनुग्रह और करुणाओं के द्वारा, मैं अपना शरीर आज और हर दिन जीवित बलिदान के लिए समर्पित करता हूँ।"

परमेश्वर सच में तुम्हारी परवाह करता है

यीशु तुमसे गहरा प्रेम करता है। बहरहाल, यह तथ्य कि सभी ने पाप किया है, हमें परमेश्वर से अलग करता है (रोमियो ३:२३; ६:२३)। फिर भी, परमेश्वर तुम्हारे लिए परवाह करता है और वह अपना प्रेम तुम्हारे साथ बाँटने के लिए एक तरीका प्रदान करता है।

इन्सान के लिए यीशु मसीह का प्रेम इतना महान था कि वह आया और मानव जाति के सभी पापों के लिए क्रूस पर मरा। उसने तुम्हारे लिए अपना लहू बहाया जिससे तुम क्षमा पा सको और अनन्त जीवन पाओ।

इकलौती चीज जो वह तुमसे माँगता है कि तुम साधारण विश्वास में अपनी ओर उसके चरित्र और प्रेम पर भरोसा करते हुए और उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हुए, उसके पास आओ। "जो कोई भी प्रभु के नाम को पुकारेगा, वह बचाया जाएगा।" (प्रेरितों के काम २:२१)

बस प्रार्थना करें, *"प्रिय यीशु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ। मैं तुम्हें अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता हूँ। मुझे इतना प्रेम करने के लिए धन्यवाद कि तुमने मेरे लिए जान दी जिससे मैं तुम्हारे साथ अनन्त जीवन बिता सकता हूँ, आमीन।"*

वह वादा करता है कि वह कभी तुम्हे प्रेम करना बंद नहीं करेगा और न ही वह कभी तुम्हें छोड़ेगा या त्यागेगा (इब्रानियों १३:५)। बाइबिल पढ़ने, प्रार्थना करने, और एक अच्छे बाइबल पर विश्वास करने वाले चर्च में भाग लेने के द्वारा उसके साथ अपने संबंध का विकास करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च

वेबसाइट: www.vashichurch.com

हिन्दी अनुवादित संस्करण के विषय में

इस पुस्तिका की आत्मिक जीवन में कीमत को ध्यान में रखते हुए ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च की टीम के सदस्यों के योगदान से इसका अनुवाद और प्रकाशन किया गया है। स्थानीय तौर पर अधिक जानकारी के लिए आप हमें संपर्क कर सकते हैं:

ग्रेटर ग्रेस नवी मुम्बई चर्च
वाशी, नवी मुंबई, भारत
+ (91) 97020 81387
ई-मेल: pastor@vashichurch.com
वेबसाइट: www.vashichurch.com

आत्मिक परामर्श के विषय में : www.gods-solution.in

ग्रेटर ग्रेस कलीसिया के विभिन्न स्थानों पर चर्च, प्रार्थना सभाएं, बाइबल स्कूल, यूथ सेवकाई, काउन्सेलिंग सेवकाइयां हैं कृपया जानकारी के लिए संपर्क करें :

मुंबई एवं उत्तर भारत : www.ggfmumbai.org
बेंगलुरु एवं दक्षिण भारत : www.ggfblr.org

पास्टर कार्ल एच स्टीवेंस की हिन्दी पुस्तिकाओं की सूची :

बस परमेश्वर को स्वयं से प्रेम करने दो
प्रतिदिन भोर में परमेश्वर से मुलाक़ात
परमेश्वर से खुलकर ग्रहण करो
पवित्र आत्मा से तुम्हारा सम्बन्ध कैसा है
बीमा न्याय आसन: दुःख या आनन्द में प्रस्तुति